PROGRESS REPORT

दैनिक बुलन्द वाणी

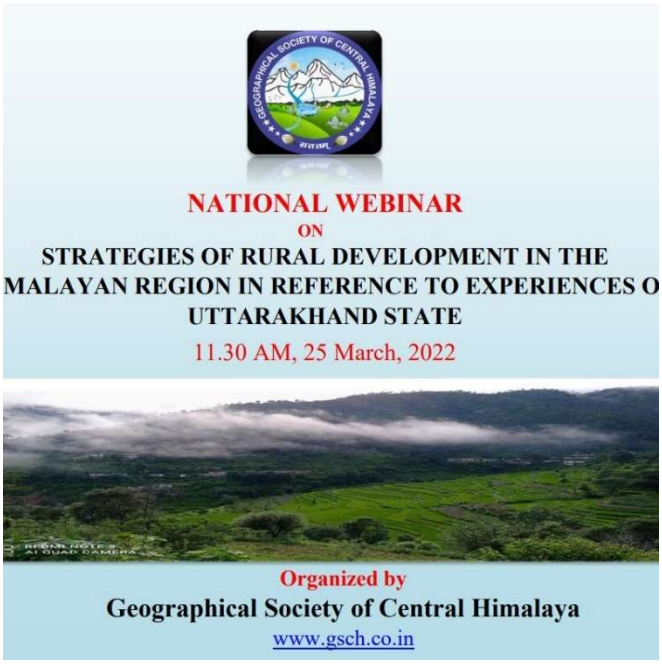

मजलूमों की आवाज़...

19-जुलाई-2022

संजय राजपूत, बुलन्द वाणी।

ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न।

देहरादून। ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय की आज महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई जिसमें सभी सदस्यों द्वारा अब तक किए गए कार्यों की समीक्षा की गई।ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेन्ट्रल हिमालय का गठन 23 मार्च 2021 को किया गया था।इसका उद्देश्य उत्तराखंड के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर विस्तार पूर्वक अध्ययन करना तथा भूगोल विषय के पाठ्यक्रम सामग्री को आधुनिक अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम में शामिल करना है, इस सोसाइटी का गठन उत्तराखंड राज्य के भूगोल छात्रों , शिक्षक एवं शोध छात्रों के मार्गदर्शन हेतु गठित की गई है। वर्ष भर प्रस्तावित कार्यों हेतु एक वार्षिक कैलेंडर तैयार किया गया। इसके अंतर्गत प्रो. अनिता रुडोला उत्तराखण्ड के सामान्य ज्ञान पर एक ऑनलाइन टेस्ट आयोजित करेंगी, डॉ. प्रेम लाल टम्टा शिक्षण सामग्री तैयार करेंगे, डॉ. कमल बिष्ट सोसाइटी हेतु संसाधन जुटाने का कार्य करेंगे, डॉ. किरन त्रिपाठी व डॉ. मंजू भंडारी राज्य के कृषि उत्पादन में अग्रणी क्षेत्रों का सर्वेक्षण करेंगी तथा डॉ. राजेश भट्ट राज्य में ईको टूरिज्म को बढ़ावा देने हेतु संबंधित सर्वेक्षण करेंगे। यह भी निश्चय किया गया कि राज्य के किसी गांव को गोद लिया जाएगा तथा उसकी भौगोलिक संरचना,आर्थिक स्थिति, जनसंख्या तथा संबंधित तथ्यों व समस्याओं का अध्ययन व विश्लेषण किया जाएगा। सोसाइटी के संरक्षक प्रो. कमलेश कुमार जी ने निर्देश दिया कि राज्य के उन गांवों की आर्थिक व भौगोलिक स्थिति का अध्ययन किया जाय जहां जनसंख्या- पलायन की स्थिति गंभीर रूप ले चुकी है। यह भी निश्चय किया गया कि सोसाइटी के विस्तार हेतु राज्य के प्रतिष्ठित भूगोलवेत्ताओं व पर्यावरणविदों को सोसाइटी से जोड़ने का प्रयास किया जाय। बैठक के सम्पन्न होने से पूर्व सोसाइटी की आजीवन सदस्यता ग्रहण करने पर कुमाऊं विश्वविद्यालय के अल्मोड़ा परिसर से भूगोल के विभागाध्यक्ष पद से अवकाश प्राप्त प्रो. जी. एस. रावत विभागाध्यक्ष भूगोल, अल्मोड़ा को सोसाइटी के फैलो से सम्मानित किया गया।

विज्ञापन, समाचार, लेख, कहानी आदि प्रकाशित कराने के लिए
सम्पर्क करें
राष्ट्रीय:- +919760241521, उत्तराखंड : 8923196960

भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आयामों का होगा अध्ययन

पौड़ी। उत्तराखंड के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक आयामों का ज्योग्राफिकल सोसायटी ऑफ सेंट्रल हिमालय संस्था अध्ययन करेगी।

संस्था की बैठक में इसके अलावा भूगोल के पाठ्यक्रम को आधुनिक बनाए जाने सहित अनेक कार्यों के लिए जिम्मेदारी भी सौंपी गई। इस दौरान कुमाऊं विवि के अल्मोड़ा परिसर से सेवानिवृत्त एचओडी भूगोल प्रो. जीएस रावत को सम्मानित किया गया।

संस्था की अध्यक्ष व बीजीआर परिसर पौड़ी में भूगोल विभागाध्यक्ष प्रो. अनीता रुडोला ने बताया कि संस्था उत्तराखंड के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पहलुओं का गहन अध्ययन करेगी। डा. प्रेम लाल टम्टा शिक्षण सामग्री, डा. कमल बिष्ट को संस्था के लिए संसाधन जुटाने, डा. किरन त्रिपाठी व डा. मंजू भंडारी को कृषि उत्पादन क्षेत्रों का सर्वेक्षण, डा. राजेश भट्ट को ईको टूरिज्म को बढ़ावा दिए जाने को लेकर सर्वेक्षण का दायित्व सौंपा गया है।

संस्था के संरक्षक प्रो. कमलेश कुमार ने बताया कि प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से भूगोलवेत्ताओं व पर्यावरणविदों को जोड़ा जाएगा। इस दौरान सेवानिवृत्त प्रो. जीएस रावत ने सोसायटी की आजीवन सदस्यता भी ली। संवाद

प्रो. जीवन रावत को मिला फेलो अवार्ड

22/07/2022

- उत्तराखंड की भौगोलिक संरचना के अध्ययन को गठित जियोग्राफिकल सोसाइटी आफ सेंट्रल हिमालया ने दिया सम्मान

संस, रानीखेत : उत्तराखंड की भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक समेत अन्य अहम विषयों पर अध्ययन करने वाली जियोग्राफिकल सोसायटी आफ सेंट्रल हिमालया (जीएसएसएच) ने कोसी नदी पुनर्जनन महाअभियान के जनक वरिष्ठ विज्ञानी प्रो. जीवन सिंह रावत को फेलो अवार्ड से सम्मानित किया है। यह सम्मान उन्हें कुमाऊं और गढ़वाल की गैरहिमानी नदियों के संरक्षण को बीते तीन दशक से शोध एवं अध्ययन के साथ ही नदी संरक्षण को प्रदेश में पृथक प्राधिकरण के गठन की पैरोकारी आदि उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिया गया है। साथ ही अत्याधुनिक भौगोलिक सूचना विज्ञान तंत्र (जीआइएस) को बतौर अन्वेषक देश प्रदेश में विस्तार देना भी उपलब्धि रहा है। हिमालयी राज्य की सामाजिक संरचना, भूगोल, आर्थिकी व सांस्कृतिक पहलुओं पर अनुसंधान कर भूगोल विषय के पाठ्यक्रम सामग्री को आधुनिक अध्ययन में शामिल कराने के उद्देश्य से गठित जीएसएसएच उत्तराखंड के भूगोलवेत्ताओं का संगठन है। सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष भूगोल (कुमाऊं विवि) व नेशनल जियो स्पेशल चेयरप्रोफेसर (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भारत सरकार) रहे प्रो. रावत ने बताया कि देहरादून में जीएसएसच के सम्मेलन में तय किया गया कि प्रदेश के एक गांव को गोद ले उसकी भौगोलिक संरचना, आर्थिक स्थिति, जनसंख्या, पलायन आदि बिंदुओं पर अध्ययन किया जाएगा। सोसायटी के संरक्षक प्रो. कमलेश कुमार का हवाला देते हुए कहा कि संस्था से उत्तराखंड के सभी प्रतिष्ठित भूगोलवेत्ताओं व पर्यावरणविदों को जोड़ा जा रहा है।

वरिष्ठ भूगोलविद् प्रो. जीवन सिंह रावत

माणा में हिमालय पर वैज्ञानिकों ने किया मंथन

- भूगोल विभाग ने चमोली के माणा गांव में किया हिमालयी चिंतन
- सेमिनार का शुभारंभ उच्च शिक्षा मंत्री डा. धन सिंह ने किया

बदरीनाथ, संवाददाता। हिमालय और इसकी महत्ता, हिमालय की संरचना और देश दुनिया पर हिमालयी पर्यावरण से पड़ने वाले प्रभावों विषय पर विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों ने महत्वपूर्ण चिंतन और विमर्श किया।

राजकीय महाविद्यालय नागनाथ पोखरी के भूगोल विभाग ने भारत के आखिरी गांव माणा में हिमालय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ऑनलाइन ऑफलाइन दोनों माध्यम से आयोजित सेमिनार का शुभारंभ ऑनलाइन माध्यम से उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने किया। डाक्टर रावत ने महाविद्यालय पोखरी के भूगोल विभाग हिमाद्री गांव माणा में ग्रामीणों के बीच हिमालय पर चिंतन और विमर्श की संगोष्ठी की इस पहल की सराहना की। महाविद्यालय नागनाथ पोखरी के प्रधानाचार्य प्रो.पंकज पंत ने संगोष्ठी में हिमालय की आंतरिक एवं वाह्य संरचना सैल के बारे में विस्तार से बताया। कहा हिमालय में छोटे भूकंप ना आना बड़े भूकंप के संकेत हैं। हिमालय में पर्याप्त खनिज सम्पदा है जो कुछ नाम हैं भी समझा जा सकता है। ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय की अध्यक्ष एवं हेमंती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय पौड़ी कैंपस भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अनीता रोडला ने कहा कि हिमालय राष्ट्र का मस्तक है। भूगोल विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अंजली रावत हिमालय में हो रही परिवर्तन पर अपने विचार रखे। मौके पर डा. राजेश भट्ट असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल विभाग नागनाथ पोखरी ने कहा कि हिमालय दिवस हिमालय रक्षक सीमांत माणा गांव वासियों के साथ द्वारा आयोजन का प्रथम प्रयास है। इस संगोष्ठी में डॉ. उपेंद्र चौहान ने कहा कि हिमालय के स्वरूप पर चिन्ता करने का समय है। डॉ. रेनू सेनवाल डॉक्टर सुनीता नेगी ने हिमालय और इसके पर्यावरणीय स्वरूप पर तथ्यात्मक जानकारी दी। मौके पर भूगोल विषय की छात्रा सपना, अंजलि, प्रतिभा रंजना आदि थे।

उत्तराखंड प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्रीनगर के हर्षराज ने मारी बाजी

जियोग्राफिकल सोसाइटी व बीजीआर परिसर ने करवाई प्रतियोगिता

संवाद न्यूज एजेंसी

पौड़ी। जियोग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय संस्था व गढ़वाल विवि के बीजीआर परिसर पौड़ी की ओर से उत्तराखंड प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

ऑनलाइन हुई प्रतियोगिता में उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों और देश के अन्य हिस्सों से 573 छात्र-छात्राओं व शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में गढ़वाल विवि के बिरला परिसर श्रीनगर के छात्र हर्षराज ने बाजी मारी।

ऑनलाइन हुई उत्तराखंड प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का उद्घाटन संस्था की अध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक प्रो. अनीता रुडोला ने किया। उन्होंने कहा कि यह प्रतियोगिताएं छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी के लिए मंच प्रदान करती हैं। प्रतियोगिता परीक्षा सचिव व डीबीएस कॉलेज देहरादून के डा. कमल बिष्ट ने बताया कि प्रतियोगिता में शामिल 573 छात्र-छात्राओं में 66 छात्रों ने 60 फीसदी से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।

प्रतियोगिता में 573 छात्र-छात्राओं ने किया प्रतिभाग

प्रतियोगिता में डीबीएस कालेज देहरादून की कंचन कुमारी, बीजीआर परिसर पौड़ी के प्रवीण कुमार, बिरला परिसर श्रीनगर की शिवांगी राणा व एसडीएम पीजी कालेज डोईवाला देहरादून के सुमित नेगी संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रहे। बिरला परिसर श्रीनगर के शोधार्थी सिद्धार्थ राणा, विवेक सिंह व जम्मू विवि के ताहिर अजीज ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पाया। प्रतियोगिता के आयोजन में प्रो. कमलेश कुमार देहरादून, डा. प्रेम लाल टम्टा श्रीनगर, डा. राजेश भट्ट नागनाथ पोखरी, डा. किरण त्रिपाठी हरिद्वार, डा. मंजू भंडारी देहरादून ने सहयोग प्रदान किया। बीजीआर परिसर के शोध छात्र वीर सिंह व रियाज अहमद ने तकनीकी सहयोग दिया।

GEOGRAPHICAL SOCIETY OF CENTRAL HIMALAYA
भूगोल ई लर्निंग
Kamlesh kumar
Prof Anita Rudola

StreamYard
Dr Rajesh Bhatt
ANITA RUDOLA
D K
42 others
P
You

अनुभव
पलायनः व्यवहारिक पक्ष

Geographical Society of Central Himalaya

विश्व पर्यावरण दिवस - व्यावहारिक परिपेक्ष

पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता आवश्यक है।वस्तुस्थिति को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि पर्यावरण दिवस अखबारों और स्थापित पर्यावरणविदों तक सिमट कर रह गया है।पहले पर्यावरण का पर्यायवाची पेड़ (वन) माने जाते थे अब नगरपालिका अवशिष्ट पर्यावरण का पर्यायवाची प्रतीत होता हैं।पर्यावरण संरक्षण एवं रूढ़िवादिता में घनिष्ठ रिश्ता है।पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित व्यक्ति में एक दृढ़ता की आवश्यकता है। बड़ी समस्याओं का हल समय के साथ हो ही जाता है। हमारी दिनचर्या से संबंधित पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारियों का निर्वहन व्यक्तिगत स्तर पर ही होना हैं।हमारे देश की जनसंख्या आकार को देखते हुए सब कुछ की अपेक्षा सरकार से करना नाजायज है। वर्तमान समय में नगरपालिका- महापालिकाओं के पास अच्छी सफाई व्यवस्था है पर उसके परिणाम प्राप्त करने में नागरिकों की भूमिका आवश्यक है। कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

1.प्रत्येक आयु वर्ग,स्त्री-पुरुष की पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी होनी चाहिए।हमें समझना चाहिए की भागीदारी का स्तर 5 से 10% ही रह पाएगा।

2. हम उपयोग में कमी लाए और बेस्ट- अपशिष्ट को न्यूनतम रखें। इससे पानी और अन्न, कागज,प्लास्टिक,वॉलपैन,चौकलेट आदि आदि।

3. हर स्थान,मोहल्ले,कॉलेज,सचिवालय,निदेशालय,ग्राम,वार्ड में एक पर्यावरण संरक्षण समिति (ई.सी.सी.) का गठन कर उसके कार्य क्षेत्र का निर्धारण कर छमाही रिपोर्ट आए। ई.सी.सी.पूरी तरह से गैर राजनीतिक होनी चाहिए।किसी स्थान पर हर वर्ग के लिए कर्तव्यों का जापन कर 5 जून को बैठक आयोजित हो।

4. हमारी राष्ट्रीय- प्रादेशिक-स्थानीय -व्यक्तिगत पर्यावरण समस्याओं पर चर्चा होनी चाहिए।

5.जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता एवं समायोजन सजगता।

5जून,2023

ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय उत्तराखंड,भारत

www.gsch.co.in

13:02

13:02

13:02

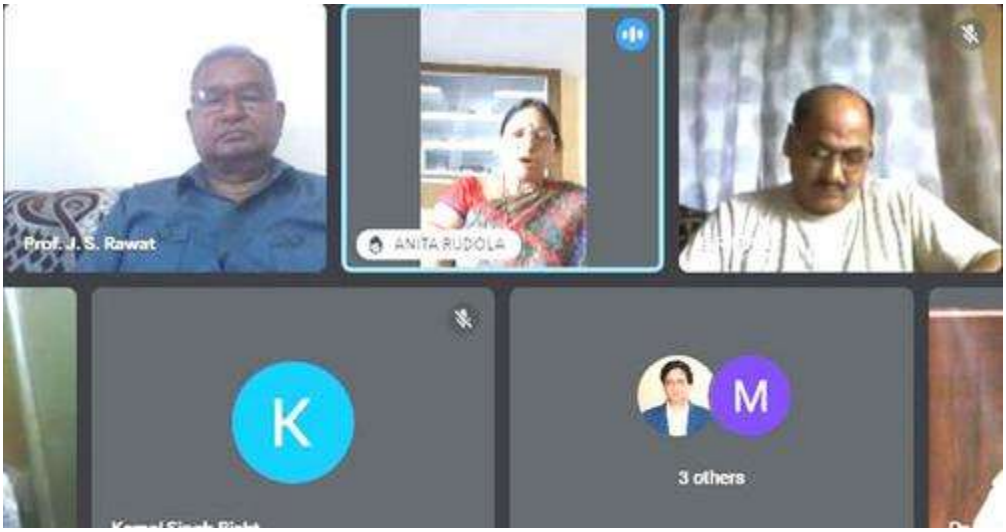

Garhwal Main
Clip

अक्तूबर-नवंबर माह में होगा सेमिनार

पौड़ी। ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय की वर्चुअल हुई बैठक में समिति के सदस्यों ने अक्तूबर-नवंबर माह में सेमिनार करने का निर्णय लिया। सेमिनार में हिमालय से संबंधित विषयों पर चर्चा की जाएगी।

सोसाइटी अध्यक्ष व केंद्रीय विवि एनएचबी पौड़ी परिसर की भूगोल विभागाध्यक्ष प्रो. अनीता रूडोला ने बताया कि वार्षिक कैलेंडर के अनुसार नौ सितंबर को हिमालय दिवस व 11 दिसंबर को पर्वत दिवस मनाने पर विचार किया गया। इस दौरान प्रोफेसर जीवन सिंह रावत ने 15 नवंबर को जीआईएस दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा जिसमें सभी सदस्यों ने इसे सर्वसम्मति से पारित किया।

इस दौरान सोसाइटी के सेमिनार को लेकर चर्चा हुई जिसे अक्तूबर-नवंबर माह में आयोजित करने पर सहमति बनी।

कहा कि इसके लिए एक समिति का भी जल्द गठन किया जाएगा। बैठक में सोसाइटी उपाध्यक्ष डॉ. राजेश भट्ट, प्रो. डीडी चौनियाल, प्रो. वीपी सती, वीआर पंत, प्रो. एमएस नेगी, डा. अर्चना नौटियाल, डॉ. मंजू भंडारी,

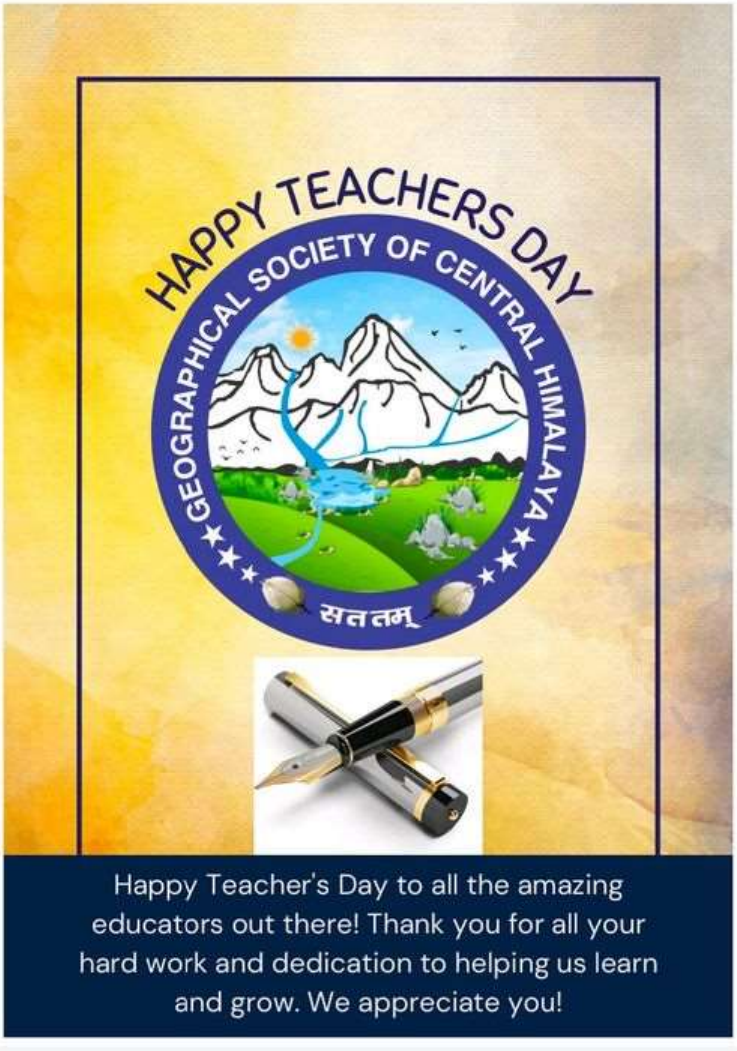

नदियां बचाने के लिए बने उत्तराखंड नदी प्राधिकरण

पौड़ी। ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय द्वारा पौड़ी परिसर में राष्ट्रीय वेबीनार आयोजित किया गया। वेबीनार में वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी दी।

वेबीनार में मुख्य वक्ता पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग जेएस रावत द्वारा हिमालय में हो रहे भौगोलिक परिवर्तनों, ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों, सूख रही नदियों की स्थिति आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कहा कि हिमालय को बचाने के लिए नदियों को बचाना आवश्यक है। नदियों को बचाने के लिए उत्तराखंड नदी प्राधिकरण गठित करना नितांत आवश्यक है।